शास्त्री - IInd

(Revenue of the govt of India) For 2020 Exam

भारत सरकार के आय के प्रमुख साधन क्या है?

भारत सरकार के आय के साधनों को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :- ① कर संबंधी आय के साधन (Sources of Tax revenue) ② गैर कर संबंधी आय के साधन (Main sources of Non Tax revenue)

① कर संबंधी आय के साधनों को हम निम्न वर्गों में विभाजित कर सकते हैं :-

I :- आयकर (Income tax) :- यह एक प्रत्यक्ष कर है जो व्यक्तियों व संयुक्त हिन्दू परिवारों तथा पंजीकृत व्यवसायियों की आय पर लगाया जाता है एक निश्चित सीमा के बाद ही आयकर (Income tax) लगता है। आयकर का एक भाग राज्य सरकारों के बीच विभाजित कर दिया जाता है। सातवें वित्त आयोग की सिफारिश के अनुसार आयकर का 85 प्रतिशत भाग राज्यों के बीच वितरित कर दिया जाता है।

(ii) निगम कर :- यह भी प्रत्यक्ष कर है, जो देशी तथा विदेशी कंपनियों की आय पर लगाया जाता है। इस कर से भारत सरकार को अधिक आयों की प्राप्ति होती है।

(iii) आयात निर्यात शुल्क :- यह कर वस्तुओं के आयात एवं निर्यात पर लगाया जाता है इस प्रकार यह एक परोक्ष कर है, इस कर से भी भारत सरकार को अधिक आयों की प्राप्ति होती है।

(iv) संघीय उत्पादन शुल्क (union excise duties) :→ इस कर से भी भारत सरकार को अधिक आयों की प्राप्ति हो रही है। भारत सरकार लगभग 70 वस्तुओं पर संघीय उत्पादन शुल्क लगाती है। यह एक अप्रत्यक्ष कर (Indirect tax) है। जो वस्तुओं के उत्पादन पर उत्पादकों से वसूल किया जाता है। इस अप्रत्यक्ष कर से भी भारत सरकार को अधिक आयों की प्राप्ति हो रही है।

(v) मृत्युकर (Wealth duties) :- यह कर विश्व के सभी प्रगतिशील राष्ट्रों में लगाया जाता है। यह एक प्रत्यक्ष कर है। वास्तव में इस कर को लगाने से संपत्ति के वितरण की विषमताओं को कम करने में मदद मिलती है। भारत में मृत्युकर को सम्पदा या जायदाद कर के रूप में लगाया जाता है ——————— P.T.O.

पूर्णप्रतियोगिता की बाजार शास्त्री-IInd

(6) पूर्ण प्रतियोगिता की बाजार में किसी उद्योग में फर्मों के प्रवेश तथा बहिर्गमन पर किसी भी तरह का नियंत्रण नहीं होना चाहिए। इसमें कोई एक फिर्म एकाधिकार की स्थिति नहीं प्राप्त कर सकेगा। (7) क्रेताओं तथा विक्रेताओं का असमायोजित प्रकृति का होना चाहिए। - पूर्ण - प्रतियोगिता बाजार के अन्तर्गत क्रेता एवं विक्रेताओं के बीच किसी प्रकार का विशेष मोह अथवा लगाव नहीं होना चाहिए। जिससे क्रेता सबसे कम मूल्य वाले विक्रेता के यहाँ खरीदते हैं, तथा विक्रेता अधिक मूल्य वाले क्रेता के हाथ ही वस्तु को बेचता है। अर्थात किसी वस्तु के बाजार में पूर्णप्रतियोगिता की स्थिति रहने पर इस वस्तु का मूल्य सर्वत्र एक समान रहता है। किन्तु वास्तविक जीवन में पूर्णप्रतियोगिता की स्थिति देखने को नहीं मिलती है। इसलिए कहा जाता है कि पूर्णप्रतियोगिता एक कल्पना मात्र है। (So Perfect Competition is a myth.)

विदित हो कि पूर्णप्रतियोगिता की बाजार में उत्पादक या फर्म की कोई नीति नहीं होती प्रत्येक फर्म मूल्य ग्रहण करनेवाली (Price taker) होती है, मूल्य निर्धारित करनेवाली (Price - Maker) नहीं होती है। प्रत्येक फर्म मूल्य को दिया हुआ मानकर उसके अनुसार वस्तु के उत्पादन की मात्रा निर्धारित करती है, अर्थात प्रत्येक फर्म "मात्रा समायोजन करने वाली ही होती है।

x

Brajesh Pathak
Acco Prof - Eco.

R.U. S. College Sukhsena.
6/4/20.

शास्त्री-Ist